श्री शंकराचार्य विजयतेतराम।

धर्मप्रचार के आधुनिक तकनीकी
माध्यम से प्रमाणित
शास्त्रोक्त ज्ञान एवं धर्म प्रचार
- व्हाट्सऐप प्रकल्प
- टेलीग्राम प्रकल्प
- फ़ेसबुक प्रकल्प

धर्मप्रचार के लिए
जमीन स्तर पर
शास्त्रोक्त ज्ञान एवं धर्म प्रचार
- संस्कार केंद्र
- द्विजो के लिए संध्या क्लास
- आदित्य वाहिनी

धर्म एवं परम्परा के वाहक वॉलंटियर्स आमंत्रित है।

ई - मेल : vaidik.brahman.gujarat@gmail.com

एडमिन टीम
- हिरेन त्रिवेदी'क्षेत्रज्ञ'
- हर्ष जोशी और टीम

Sp Adobe Spark

धर्मसम्राट करपात्रीजी महाराज

(महाराज जी की सभी बुक्सकी पीडीएफ़ लिंक पेज नम्बर १२ से)

वह केवल आठ वर्ष का बालक था उसकी प्रवृत्ति कुछ विलक्षण थी।किसी से अधिक नही बोलता था।कभी उंचे पर्वतों पहाड़ों पर चढ़कर घंटों एकान्त बैठकर कुछ सोचता विचारता रहता था।एक दिन वह घर से भाग गया ।पिता और बड़े भाईयों नें ढूंढकर पकड़कर वापस लाया।कुछ समय पश्चात फिर भाग गया ।पिता और भाई ढूंढकर लाये।डांटा,फटकारा अगर फिर से भागा तो तुझे बहुत पीटेंगे समझा!वह बोला -मुझे सत्य की खोज करनी है पिताजी मुझे जाने दीजिऐ।पिता ने उसकी प्रवृत्ति जानकर घर पर ही पढ़ाना शुरु कर दिया।कहीं फिर से न भाग जाऐ इसलिऐ पिता ने दस वर्षीय बालक का विवाह करने का विचार किया।नववर्षीया सौभाग्यवती नाम की कन्या से बालक का विवाह सम्पन्न हुआ।किन्तु विवाह के बाद भी उसकी प्रवृत्ति न बदली। पूजन अर्चन नामस्मरण ग्रन्थों का पाठन यही उसकी चर्या रहती।एक दिन भाग ही रहा था कि कभी वापस न आऊंगा तो पिताजी ने पकड़ लिया।वह बोला -"पिताजी मेरी देह-गेह में आसक्ति नही होती मुझे जाना है।"ठीक है बेटा लेकिन मेरी एक इच्छा है कि वंशपरम्परा का उच्छेद न हो इसलिए हम तुम्हारी एक सन्तान चाहते है।उसके बाद मै तुम्हे रोकूंगा नही-पिताजी नें कहा।वह बोला;ठीक है पिता जी लेकिन वचन दीजिए उसके बाद आप मेरा मार्ग नही रोकेंगे।हां बेटा मैं वचन देता हूं।अब वह किशोर गृहस्थ हो गया लेकिन दिनचर्या पहले जैसी ही रही।१७ वर्ष की अवस्था में उसके घर मे भगवती स्वरूपा कन्या नें जन्म लिया।अब किशोर जाने की उद्यत हुआ।पिता सामने खड़े थे। माता दौड़कर गले से लिपट पड़ी बेटा तू मुझे छोडकर नही जा सकता।वह बोला अपने आंसू रोक दे मां आज मैं नही रुकूंगा ।लेकिन तेरे बिना मैं कैसे रहूंगी?"जैसे आचार्य शंकर के बिना उनकी मां रही थी वैसे तू भी रहना मां। सनातन धर्म पर संकट छाया है मुझे भारतभूमि का ऋण चुकाना है।मैने तेरे गर्भ का आश्रय लिया तेरी छाती का रक्त पिया है तुझे वचन देता हूं तेरा दूध कलंकित न होने दूंगा।"उतने मे नवजात बालिका को गोद में लिऐ पत्नी ने चरण पकड़ लिए नाथ मत जाईऐ सती स्त्री का प्राण केवल उसका पति होता है!वह बोला -यह तुम्हारे भी माता पिता है इनकी सेवा करो।पिता का वात्सल्य भाईयों का स्नेह मां की ममता पत्नी का प्रेम सन्तान का मोह सब को तिनके के समान त्यागकर वह किशोर चला गया।२४ वर्ष की अवस्था में वह युवा "#धर्मसम्राटकरपात्रीजी_महाराज" के नाम से विख्यात हुआ।

जब भारतवर्ष यूरोपीय साम्राज्यवाद के खूनी पंजों से जकड़ा हुआ था।सनातन मूल्यों और संस्कृति का ह्रास हो रहा था तब उत्तरप्रदेश के प्रतापगढ़ जिला ग्राम भटनी में सरयूपारीण वेदपाठी ब्राह्मण श्री रामनिधि ओझा तथा परमधार्मिक शिवरानी के आंगन में सम्वत्१९६४ में श्रावण शुक्ला द्वितीया सन् १९०७ को एक महापुरुष का अवतरण हुआ।इनका बचपन का नाम '#हरनारायण_ओझा' था।ये रामनिधि के तीन पुत्रों मे सबसे छोटे थे।१७ वर्ष की अवस्था में हरनारायण गृहत्यागकर प्रयाग से होकर गुजर रहे थे।कुछ दूरी पर हरनारायण ने देखा कि

	वटवृक्ष के नीचे एक कोपीनमात्रधारी अवधूत आंखे बंद किए बैठे हैं।हरनारायण पास आकर उनके तेज को निहारने लगे।अवधूत ने अन्तर्चक्षु से किशोर को देख लिया और चर्मचक्षुओं को उन्मीलित करते हुऐ कहा;"आओ मेरे बच्चे मैं तुम्हारी ही प्रतीक्षा कर रहा था।तुम नरवर जाओ और अध्ययन करो उसके पश्चात तुम मेरे पास आना।तुम पर सरस्वती की विशेष कृपा रहेगी।" यही अवधूत शिरोमणि कुछ काल पश्चात १६५ वर्षों से बंद पड़ी आदिशंकर द्वारा स्थापित ज्योतिष्पीठ का उद्धार कर "#उत्तराम्नायज्योतिष्पीठोद्धारकश्रीमज्जगद्गुरूशंकराचार्यब्रह्मानंद_सरस्वती"कहलाऐ । हरनारायण पुण्यतोया गंगा के किनारे किनारे आगे बढे।नरवर पहुंचकर उन्होनें वहां देखा कि #तपोमूर्तिजीवनदत्तब्रह्मचारी जी की अध्यक्षता में प्राचीन गुरूशिष्य परम्परा के अनुसार अध्यापन हो रहा है।एक दण्डी सन्यासी भी वहां विराजित है।वह थे #तर्कवाचस्पतिषड्दर्शनाचार्यविश्वेश्वराश्रम_स्वामी।इन्होनें हरनारायण को शिष्य बनाकर व्याकरण शास्त्र,साङ्गोपाङ्ग वेद व षड्दर्शन का गूढ़ अध्ययन करवाया और इनका नाम "हरिहर चैतन्य"रखा।हरिहर की स्मरण शक्ति #फोटोग्रैफिक थी। एक बार जिस चीज को पढ़ लेते वर्षों बाद भी बता देते कि इस ग्रंथ में इतने पृष्ठ पर है। इसके बाद हरिहर ने अच्युतमुनि से संस्कृतसाहित्य व पुराणों का अध्ययन किया।अब हरिहर चैतन्य का तप की तरफ आकर्षण हुआ। अध्ययन से विरत हो वह तरूण तपस्वी उत्तराखंड की हिम से आच्छादित हिमालय की तलहटियों में तीव्र योगश्चर्या करने लगे। कौपीनमात्र धारण करना निरावरणचरण से यात्रा करना शीतोष्ण भयंकर द्वंदों को सहन करना १९ वर्ष की अवस्था में ही इनका स्वभाव बन गया था। कुछ समय पश्चात२४वर्षीय हरिहर चैतन्य ने ब्रह्मानंद सरस्वती जी के पास आकर उनसे वेदान्त का गूढ़तम अध्ययन कर #शिखासूत्र का त्यागकर विधिवत #दण्ड ग्रहणकर #नैष्ठिकब्रह्मचर्यपूर्वक सन्यास की दीक्षा ली।अब हरिहर चैतन्य "#परमहंसपरिव्राजकाचार्यहरिहरानंदसरस्वती #करपात्र_स्वामी"कहलाए। वह #शंकराचार्यब्रह्मानंदसरस्वती जी से दण्डग्रहण कर प्रयाग पहुंचे।सर्वप्रथम लोगों में यह चर्चा फैली कि "गंगातट पर एक कौपीनमात्रधारी युवा महात्मा विचरण करते हुए आ रहे हैं। मस्तक पर ऐसा ब्रह्मतेज मानो साक्षात भुवनभास्कर ही उदित हो गऐ हों।उन्हे देखकर ऐसा प्रतीत होता है मानो साक्षात सन्यास ही मूर्तिमान होकर आया हो।वह केवल हाथ पर ही भिक्षा ग्रहण करते हैं वह भी केवल ब्राहमणों के घर से।नमक और चीनी ग्रहण नही करते। कर को ही पात्र बना भिक्षा ग्रहण करते हैं इसीलिऐ वह '#करपात्रीजी'के नाम से प्रसिद्ध है।(#करःएवपात्रंयस्यसः)कोई संग्रह-परिग्रह नही परमनिष्काम परमविरक्त।वह केवल संस्कृत में ही सम्भाषण करते है।वह निरावरण चरणों से पैदल यात्रा करते हैं कभी सवारी नही करते।वह हरेक विषय का #वेदप्रामाण्य से

श्री वैदिक ब्राह्मण ग्रुप, गुजरात

	युक्तियुक्त सुन्दर समाधान करते हैं।सुस्पष्ट प्रखरवाणी अगाध पाण्डित्य से युक्त वेदपद्धति के पूर्णसमर्थक हैं।वह नरवर के #विश्वेश्वराश्रमस्वामी से शिक्षित व ब्रह्मानंदसरस्वती से दीक्षित हैं।" फिर तो सन्तसमुदाय और जनसमुदाय उनके दर्शनार्थ उमड़ पडा।महान ब्रह्मवेत्ता #उड़िया_बाबा स्वयं उनके दर्शनार्थ चलकर आऐ।उनको आते देख करपात्री जी ने गुरुदृष्टि रखने के कारण उड़िया बाबा को दण्डवत किया। इस तरह उनके अगाध दर्शनशास्त्र के पाण्डित्य, ब्रह्मविद्या व अद्भुत प्रवचन कुशलता से सन्तसमाज मे बौद्धिकवर्ग में क्रान्ति का प्रसार हो गया। आगरा जिला मे एक #ब्रह्मसत्र का आयोजन हुआ जिसमे दण्डीस्वामी विश्वेश्वराश्रम जी,उड़िया बाबा,#अखण्डानन्द_सरस्वती प्रभृति विभूतियां तथा भारतवर्ष के हजारों धुरन्धर विद्वान एकत्र हुऐ।वहां दस हजार के लगभग जनसमुदाय एकत्र होता था। उड़िया बाबा ने वेदान्त पर प्रवचन कर विद्वत्समाज को मंत्रमुग्ध कर दिया। करपात्री जी को गीता के पन्द्रहवें अध्याय पर प्रवचन करने को कहा गया।परन्तु करपात्री जी मस्ती में आ गऐ और "#श्रीभगवान्उवाच"केवल इस पद पर सात दिन तक प्रवचन करते रहे।समग्र ऐश्वर्य,धर्म,श्री,यश,ज्ञान तथा वैराग्य श्रीकृष्ण में किस प्रकार है।विभिन्न मतों के अनुसार इसका ही सप्तदिवस पर्यन्त वर्णन करते रहे। उनकी देखा देखी अखण्डानंद सरस्वती ने भी पंचदशी के"#आत्मानम्चेत्विजानीयात्"इस वचन सात दिनों तक व्याख्यान किया।सप्ताहव्यापि यह एक ऐतिहासिक ब्रह्मसत्र था। धर्मशास्त्रों में इनके अगाध पाण्डित्य को देखकर इन्हें '#धर्मसम्राट' की उपाधि से विभूषित किया गया।#शारीरकमीमांसा के अद्भुत व्याख्याता होने के कारण यह"#अभिनव_शंकर"के नाम से अभिहित हुऐ। #श्रीविद्या में दीक्षित होने के कारण इनको '#षोडशानंदनाथ'कहा गया।अब यह "धर्मसम्राट करपात्री जी महाराज"के नाम से अखिल भारतवर्ष में प्रतिष्ठित हो गए। ज्योतिर्मठ शंकराचार्य ब्रह्मानंद सरस्वती ने इन्हे अगला शंकराचार्य घोषित करना चाहा परन्तु करपात्री जी ने यह कहकर अस्वीकार कर दिया कि इस पद के सीमा में रहकर मैं सनातन मूल्यों का प्रकाश स्वच्छंद होकर नही कर पाऊंगा।तब ब्रह्मानंद सरस्वती जी ने '#कृष्णबोधाश्रमजी_महाराज' को अपना उत्तराधिकारी बनाया।कृष्णबोधाश्रम जी महान ज्ञानी थे। करपात्री जी ने धर्मोद्धार की भावना से अखिल भारतवर्ष में हजारों महायज्ञों के आयोजन किए।गंगातट पर घास फूंस की झोपड़ी डालकर रहते थे। प्रातः एक बजे उठकर दो घंटा भ्रमण तदन्तर शौचादि से निवृत्त हो 3 घण्टा ध्यान पश्चात रुद्राष्टाध्यायी से रुद्राभिषेक,शालग्रामादि का श्रीयन्त्रादि का पूजन व अढ़ाई घंटे में शीर्षासन में स्थित होकर सम्पुट सप्तशती का पाठ तदन्तर स्वाध्याय तदनन्तर शिष्यों को पढ़ाना व जिज्ञासुओं की जिज्ञासाओं का समाधान,त्रिकाल स्नान व

	ध्यान तथा २४घण्टे में एक बार भिक्षाटन सांय सूर्यास्त से पूर्व। यह थी धर्मसम्राट करपात्र स्वामी की दिनचर्या। उनके साथ सत्संगार्थ संतजन पधारते रहते फक्कड़ों का सत्संग चला रहता। बाद में उन्होंने नियम और कठोर कर दिया सात दिन तक गंगाजल पर आश्रित रहकर आठवें दिन भिक्षाटन करते। ▫#शास्त्रार्थ= करपात्र स्वामी वेदविरुद्ध मतावलम्बि आचार्यों की चुनौती को कभी सहन नही करते थे।एकबार वह देवास से हरिद्वार आऐ तो सुना कि #मध्वाचार्यविद्यामान्यतीर्थ ने #अद्वैतमत को आसुरी मत घोषित किया है तो करपात्र स्वामी सिंहगर्जना करते हुऐ बोले इतने बड़े बड़े विद्वानों ने सबने अद्वैतमत का पराभव कैसे स्वीकार कर लिया किसी ने कुछ कहा क्यूं नही? उनकी गर्जना सुनकर सभी बोले महाराज हम शास्त्रार्थ के लिऐ तैयार है आप मध्यस्थ हो जाइऐ। करपात्र स्वामी बोले मध्यस्थ होके क्या प्रयोजन अब तो शास्त्रार्थ केवल हम करेंगे आप लोग बस व्यवस्था कर दें। शास्त्रार्थ का समय और स्थान निर्णीत हुआ।प्रथम दिवस तो करपात्र स्वामी विद्यामान्यतीर्थ का मत शान्तिधैर्यपूर्वक सुनते रहे।द्वितीय दिवस निर्णय होना था जैसे ही करपात्र स्वामी बोलने को उद्यत हुऐ तो विद्यामान्यतीर्थ को मौन साधके वहां से प्रस्थान करने के अलावा कोई विकल्प न दिखा। महान जन समुदाय के "धर्मसम्राट करपात्री जी महाराज की जय हो"के नारों से आकाश गूंज उठा" करपात्र स्वामी ने सबको शान्त करते कहा हमारी जय न कहिऐ धर्म की जय कहिऐ क्योंकि धर्म की ही #जयति होती है। हरिद्वार के सन्तों और मण्डलेश्वरों ने करपात्र स्वामी को बड़ी ही सुन्दर #महर्धरुद्राक्ष माला और फल भेंटकर निवेदन किया कि यदि आपकी अनुमति हो तो हम #विजयोत्सवयात्रा निकालना चाहते हैं और आपको हाथी पर चढ़ाकर नगरयात्रा करवाऐंगे।करपात्री जी ने स्पष्ट शब्दों में कहा यह कथमपि उचित नही है।शास्त्रार्थ तत्वबोध के लिऐ होता है।"#वादेवादेजायतेतत्वबोधः"किसी के पराभव या निरादर के लिऐ नही।#विद्याविवादकेलिऐकभीनहीहोती।अब इस बात को यहीं रोक दीजिऐ। आर्यसमाज के संस्थापक दयानन्द सरस्वती के निर्वाण शताब्दी समारोह पर आर्यसमाज के विद्वान कहलाने वाले तथाकथित विद्वानों ने काशी में घोषणा की कि हम यहां मूर्तिपूजा,अवतारवाद,जन्मना वर्णव्यवस्था मरणश्राद्धादि का खण्डन करेंगे कोई भी हमारे साथ शास्त्रार्थ हेतु उपस्थित हो सकता है।करपात्र स्वामी इस चुनौती को भला कैसे स्वीकार कर सकते थे।उन्होनें तुरन्त काशी विद्वतपरिषद् को आज्ञा दी सनातन धर्म मे कोई विरोधी हस्तक्षेप करने का अधिकारी नही है,सनातन सिद्धान्त की रक्षा की जाऐगी अतः उचित व्यवस्था की जाऐ। यह बात आग की तरह फैल गई फिर तो दिग दिगन्तर से जन सैलाब उमड़ने लगा।आर्यसमाजियों ने असफल प्रयास किया परन्तु जिस तरह सूर्य के सामने अन्धकार कभी नही टिक सकता वैसे ही अधकचरों की करपात्री जी के समक्ष क्या वार्ता। इसीतरह तर्कधुरन्धर #मदनमोहनमालवीय जी ने भी करपात्री जी से

	शास्त्रार्थ में भूल की ।कारण था कि मालवीय भी गान्धी की तरह वर्णाश्रम मर्यादा का उल्लंघन कर सभी लोगों का देवालयों में प्रवेश व प्रणवमन्त्र की दीक्षा स्त्र्यादिकों को व अन्त्यजादिकों को देना प्रारम्भ कर दिया। करपात्री जी ने विरोध किया तो मालवीय ने पुराणों का प्रमाण बताकर अपने को सही सिद्ध करना चाहा और शास्त्रार्थ की चुनौती दे डाली बेचारे मालवीय को अन्त में नतमस्तक होना पड़ा व प्रणवमन्त्र की दीक्षा सभी को देने से हट गऐ।करपात्री जी उनका बडा आदर करते थे उन्हे महान विभूति बताते थे।परंतु जब वेदोक्त सनातन वर्णाश्रमधर्म मर्यादा पर कोई कुठाराघात करे तो सहन नही कर पाते थे। करपात्री जी ने अपना अधिकांश जीवन काशी में व्यतीत किया।काशी से उन्हे बहुत लगाव था।काशीवास उन्हे अत्यन्त प्रिय था।महाराज की मान्यता थी कि काशी मे भगवान विश्वनाथ द्वारा मुक्ति का सदाव्रत चलता रहता है #मङ्गलंमरणंयत्र.....। ▫#गोरक्षाआन्दोलनतथाइन्दिरावंशकोशाप: बात 1966 की है।उस समय भारत में गोवंश की हत्या निर्भीक रूप से की जा रही थी।सनातन धर्मियों ने आंदोलन इत्यादि कर सरकार से आग्रह किया कि गोहत्या पर पूर्ण प्रतिबन्ध हो और गोवंश की रक्षा की जाऐ।इन्दिरा गान्धी की नीतियों से जनता में आक्रोश था।उसका जीतना लगभग असंभव था।इन्दिरा ने कूटनीति का सहारा लेकर करपात्र स्वामी से निवेदन किया कि मुझे जीताने का जनता से आग्रह करें चुनाव के बाद गोहत्या पर पाबन्दी लगा दी जाऐगी और सभी कत्लखानों को बन्द कर दिया जाऐगा जो अंग्रेजों के समय से चले आ रहे हैं।।करपात्री जी के आशीर्वाद से इन्दिरा जीत गई लेकिन सत्तालोलुप अदूरदर्शी इन्दिरा मुसलमानों और कम्युनिस्टों के दबाव मे आकर अपने वादे से हट गई।देश के तमाम सन्तों-महापुरुषों व जनता ने संविधान मे संशोधन कर सम्पूर्ण देश में गोहत्या पर पाबन्दी लगाने व कत्लखानों को बन्द करने का आग्रह कर संसद भवन के सामने 7 नवम्बर1966को महान्दोलन प्रारम्भ कर दिया।हिन्दू पंचांगानुसार उस दिन सम्वत् 2012कार्तिक शुक्ला अष्टमी थी जिसे गोपाष्टमी भी कहा जाता है। इस आन्दोलन में चारों पीठों के शंकराचार्य देश के सभी सन्त आर्यसमाजी जैनधर्मी आदि सभी समुदायोंने बढ़चढ़कर हिस्सा लिया।महान संत प्रभुदत्त ब्रह्मचारी,पुरी शंकराचार्य निरंजनदेवतीर्थ तथा सन्त रामचन्द्र वीर ने आमरण अनशन घोषित कर आन्दोलन मे प्राण फूंक दिए।शान्तिपूर्वक बैठे हुऐ सन्त समुदाय पर इन्दिरा नें पुलिस द्वारा फायरिंग करवा दी।भयंकर भगदड़ मच गई।इस कांड में 250 साधुओं की हत्या हुई।तत्कालीन गृहमंत्री गुलजारीलालनंदा ने क्षुब्ध होकर त्यागपत्र दे दिया।निरञ्जनदेवतीर्थ को पांडिचेरी जेल में बन्द कर दिया गया।करपात्री जी को तिहाड़ जेल मे बन्द कर दिया तथा कई अन्य सन्तों को बलात जेल मे ठूंस दिया गया।72 दिन अनशन के होने पर निरञ्जनदेवतीर्थ का स्वास्थय गिरने लगा तो करपात्री जी ने पत्र भेजा; "महाराज आप धर्म के प्रहरी है अतः आप का रहना आवश्यक है अनशन तोड दीजिए।"करपात्री जी के आग्रह पर निरञ्जनदेवतीर्थ तथा प्रभुदत्त जी ने अनशन

श्री वैदिक ब्राह्मण ग्रुप गुजरात

	तोड़ दिया परन्तु #संतरामचन्द्रवीर आमरण अनशन पर डटे रहे।लगातार 166दिनों तक अनशन कर हिन्दू सन्त रामचन्द्र वीर ने गोरक्षा के लिऐ अपने प्राणों का बलिदान दिया।इस अनशन ने दुनिया के सारे रिकार्ड तोड़ दिऐ। तिहाड़ जेल में ही सन्तों ने करपात्री जी से सत्संग के लिऐ आना जाना प्रारम्भ कर दिया।इन्दिरा ने तिहाड़ जेल के खूंखार आतंकियों को करपात्री जी को मारने व गायों की हत्या करने को मुक्त कर दिया।हाथों मे लोहे की छड़ियां लेकर कैदियों का दल करपात्री जी पर टूट पड़ा।करपात्री जी #आभिचारिक_मन्त्रों से अपनी रक्षा कर लेते परन्तु यह सब इतना शीघ्र हुआ कि उन्हे सोचने का मौका भी न मिला।तीन साधुओं ने करपात्री जी को ढक दिया।तीनो साधु लोहे की छडियों से बिन्ध गऐ करपात्री जी बच गए किन्तु एक छड़ी बीच से घुसकर उनकी बायीं आंख में जा घुसी।दायीं आंख पर भी चोटें आई।इन्दिरा के इस कुकृत्य को देखकर करपात्री जी ने लहुलुहान साधुओं की लाशों को गोद मे उठाकर इन्दिरा को भयंकर शाप दे डाला- "#यद्यपितूनेनिर्दोषसाधुओंकीहत्याकरवाईफिरभीमुझेइसकादुःखनहीहैलेकिनतूनेआज #गोपाष्टमीकेदिनगोहत्यारोंकोगोहत्याकीछूटदीयहसर्वथाअक्षम्यहैजामैंतूझेआजशापदेता हूँ।#अष्टमीकोहीतेरेवंशकासमूलविनाशहोजाऐगा।#तेरेवंशजचाहेआकाशमेंहोपातालमेंहोदेशमेंहोयाविदेशमेंमेराशापउनकापीछानहीछोड़ेगा। "फिर करपात्री जी ने मानस की यह पंक्ति लोगों को सुनाई:'#सन्तअवज्ञाकरिफलऐसा। #जारहिनगरअनाथकरिजैसा।।' प्रभुदत्त ब्रह्मचारी जी इस घटना के साक्षी थे। इन्दिरा के भय किसी भी समाचारपत्र ने इस घटना को प्रकाशित नही किया लेकिन 'आर्यावर्त'और 'केसरी'नामक मासिक पत्रिकाओं मे यह घटना सविस्तार छापी गई।करपात्री जी ने कल्याण के सम्पादक को अपनी भविष्यवाणी छापने को कहा ।तब कल्याण के 'गोअंक'मे यह घटना अक्षरक्षः छापी गई।कुछ समय बाद अंग्रेजी पत्रिकाओं मे करपात्री जी प्रदत्त शाप का उल्लेख इस प्रकार हुआ-"I speak out your clan too will get destroyed on days of Ashtami tithi". अब बुद्धिजीवी स्वयं विचार करें संजय गान्धी की हवाई दुर्घटना में मृत्यु23जून1980 अष्टमी तिथि को हुई। दिल्ली में 31अक्तूबर1984 को इन्दिरा की हत्या हुई उस दिन भी अष्टमी थी। 21मई1991को बमविस्फोट मे राजीव गांधी की हत्या हुई उस दिन भी हिन्दू पंचाग के अनुसार अष्टमी तिथि थी। तो क्या #कुकर्मियों का यह वंश करपात्री जी के शाप के व्यूह में है अथवा क्या यह करपात्री जी के शाप का प्रभाव है? इस सदी के महान ज्योतिषी #श्रीकोट्टमराजूनारायण_राव अपनी पुस्तक "ज्यौतिष प्रारब्ध तथा कालचक्र"(#Astrology_Destiney_and_the_Wheel_of_time)में लिखते हैं-'जवाहरलाल नेहरू उड़ीसा में भुवनेश्वर गऐ थे।तभी उनको लकवे का आघात हुआ जो बाद मे उनकी मृत्य का कारण बना।उनकी सुपुत्री इन्दिरा की भी

	भुवनेश्वर से आने के दूसरे दिन 31अक्तूबर 1984 को हत्या हो गई।इन्दिरा के पुत्र संजय हवाई दुर्घटना में मारे गऐ तो इन्दिरा के दूसरे पुत्र राजीव भी हवाई जहाज से भुवनेश्वर से सीधे मद्रास आऐ थे जहां उसी दिन21 मई 1991को बमविस्फोट से उनकी मृत्यु हुई।प्रारब्ध कुछ रहस्यात्मक तरीके से इस परिवार के साथ खेल रहा है।" करपात्री जी की बायीं आंख की ज्योति पूरी तरह समाप्त हो चुकी थी तथा दूसरी की खत्म होने की कगार पर थी।करपात्र स्वामी ने कोई चिकित्सा न करवाकर द्वादशनमस्कार तथा चाक्षुषोपनिषद् से भगवान सूर्य की उपासना कर नेत्रज्योति सूर्य से पुनः प्राप्त की। ▫#हिन्दूकोड़बिल-: अंग्रेजों ने सनातन वैदिक हिन्दू वर्णाश्रमव्यवस्था को तोड़ने के लिऐ 'हिन्दूकोड़बिल'की रूपरेखा तैयार की थी। इसकी सारी बातें हिन्दू धर्मशास्त्रों के विपरीत थी।करपात्री जी ने कट्टर विरोध किया जगह-जगह हिन्दू कोड़ विरोधी समितियां बनाई।नेहरू ने हिन्दू कोड़ बिल को पास करने का अथक परिश्रम किया।यहां तक कि त्यागपत्र की धमकी भी दी।किन्तु करपात्री जी के महत्प्रयासों से यह पास न हो सका।अगर हिन्दू कोड़ बिल पूर्णतः पास हो गया होता तो आज हिन्दू अपने ही देश में अपने अस्तित्व के लिए भीख मांग रहे होते।भारतविभाजन का सबसे पहले विरोध करने वाले करपात्री जी थे।यह बात कितने लोगो को ज्ञात है यह हम नही जानते।गाधीं,नेहरू तथा विनोबा भावे की नीतियों के वह प्रबल विरोधी थे।तथाकथित संविधान निर्माताओं अम्बेडकरादि की विचारधाराओं से वह अत्यन्त असंतुष्ट थे।निर्मित संविधान भारत के हित मे नही है यह उन्होने कई बार कहा। वह कहते थे संविधान का अर्थ है '#सनातन_विधान' और वह सनातन विधान केवल वेदों में वर्णित है वेदविहित विधान मनु याज्ञवल्क्यादि महर्षियों ने अपनी स्मृतियों मे गुम्फित किया है अतः भारतीय संविधान धर्मशास्त्रों के अनुकूल धर्मसापेक्ष पक्षपातविहीन व शोषणविनिर्मुक्त होना चाहिऐ। करपात्र स्वामी नें काशी में धर्मसंघ तथा 1948 में #रामराज्यपरिषद की स्थापना की।काशी में ही शास्त्रों मे वर्णित हजारों वर्षों से लुप्त सुमेरूपीठ की स्थापना की। ▫करपात्री जी द्वारा लिखित ग्रन्थ व साहित्य= करपात्री जी ने अनेक दिव्य ग्रन्थों की रचना की आधे से अधिक ग्रन्थ अभी अप्रकाशित ही है।कुछ प्रकाशित साहित्य इस प्रकार है- ▫वेदार्थपारिजात-शुक्लयजुर्वेद पर भाष्य इसका नाम 'करपात्र भाष्य'भी है।इसमे दयानंद सरस्वती की आपत्तियों का निराकरण भी महाराज ने किया है। ऋग्वेद पर भी भाष्य लिखा है पर आज तक उसका प्रकाशन नही हुआ। ▫भक्तिरसार्णवः-यह करपात्री द्वारा संस्कृत मे लिखित भक्तियोग पर उत्कृष्ट ग्रन्थ है।इसका हिन्दी अनुवाद अभी तक नही किया जा सका।करपात्री जी ने कहा था कि जो अद्वैत सिद्धान्त और भक्तिसिद्धान्त दौनो का ज्ञाता होगा वही इसका अनुवाद कर पावेगा।

श्री वैदिक ब्राह्मण ग्रुप, गुजरात

	▫वेदस्वरूपविमर्शः-वेद के अपौरूषेयत्व पर शास्त्रीय विवेचन केवल संस्कृत मे लिखित। ▫श्रीविद्यारत्नाकरः-संस्कृत मे लिखित इस ग्रन्थ में श्री विद्या का सांगोपांग विवेचन किया गया है। ▫रामायणमीमांसा-कामिक बुल्के द्वारा राम व सीता पर व रामायण की ऐतिहासिकता पर गम्भीर आक्षेपों का प्रतिकार करने के ब्याज से करपात्री जी ने सभी पाश्चात्य महामूर्खचक्रचूड़ामणि आलोचकों के सनातन संस्कृति को विकृत करने के उद्देश्य से उठाऐ गऐ गऐ आक्षेपों का निराकरण किया है।यह हिन्दी मे ही उन्होने लिखा।कामिक बुल्के बैल्जियम से भारत आया हुआ मिशनरी पादरी था।इसने 'रामकथा'नामक पुस्तक लिखी।1974 मे भारत की मूर्ख सरकार ने इस मूर्ख को पद्मभूषण से सम्मानित किया। ▫चातुर्वण्यसंस्कृतिविमर्शः-वर्णाश्रमव्यवस्था पर संस्कृत में लिखित उत्कृष्ट प्रबन्ध। ▫धर्मकृत्योपयोगितिथ्यादिनिर्णयः-कुम्भादि महापर्वों की तिथियों का सिद्धान्त ज्योतिश्शास्त्रीय निर्णय।यह उनके अगाध ज्यौतिषीय पाण्डित्य का परिचायक है।केवल संस्कृत मे लिखा गया है।इसके अतिरिक्त कालमीमांसा,विचारपीयूष,भागवतसुधा,भक्तिसुधा,राधासुधा,गोपीगीत,भ्रमरगीत आदि दिव्यातिदिव्य ग्रन्थों का सृजन करपात्र स्वामी ने किया है।इसके अतिरिक्त राजनीति व सामाजिक दशा पर उनकी लघुकाय पुस्तकें लिखी हुई है।आधे से अधिक साहित्य उनका अप्रकाशित है। एक बार उनसे किसी ने पूछा कि महाराज आप इतने ग्रन्थों की रचना करते हैं परिश्रम तो लगता होगा ।करपात्री जी बोले -"हां भई परिश्रम तो लगता है जितना कुछ मेरी बुद्धि मे है वह एक जीवनकाल मे नही लिखा जा सकता।यदि मेरे पास आठ सुबुद्ध लिखने वाले पण्डित हों तो शायद कुछ ग्रन्थों का निर्माण हो सके।" वीरसावरकर, गोवलकर आदि वैसे तो देशभक्त थे परन्तु उनकी भी शास्त्रीय सिद्धान्तों के विपरीत देशभक्ति,राष्ट्रवाद सम्बन्धि नीतियों को वे स्वीकार नही करते थे। धर्मसम्राट करपात्री जी महाराज ने देशरक्षा के लिऐ अनेकों महायज्ञों का आयोजन किया।भारत के कोने कोने मे जाकर शास्त्रीय व्याख्यान दिए।जब वह रासपञ्चाध्यायी पर प्रवचन करते तो हजारों सन्तों विद्वानों व श्रद्धालुओं का सागर उमड़ पड़ता। उन्हें सिद्धान्ततः अद्वैत और भावतः भक्ति का प्रतिपादन अत्यन्त भाता था।उनके पाण्डित्य पर कोई मुग्ध हुऐ बिना नही रह पाता था। अखंडानन्द सरस्वती जी ने कहा है कि "#वेवेदोंसेलेकरअवकहड़ाचक्रतककेजानकरथे।" हजारों वर्षों तक वैदेशिक आक्रान्ताओं के आक्रमणों से जर्जर होने,पराधीन रहने और ऋषियों द्वारा स्थापित गुरुशिष्यपरम्परा,पूजापद्धतियों,उपासनापद्धतियों को म्लेच्छों और दस्युओं के द्वारा भङ्ग किऐ जाने पर भी भारत आज तक जीवित क्यूं है जरा सोचिए!इसके पीछे एक ही शक्ति ने काम किया है वह है

	'#वेदोक्तवर्णाश्रमधर्मर्यादा'। इस एक मर्यादा में श्रद्धा होने के कारण आर्यहिन्दू सारे जुल्मों को सह गऐ।और यह मर्यादा नही रहेगी तो भारत स्वतः नष्ट हो जाऐगा।इसके न रहने से कर्मसंकरता,वर्णसंकरतादि दुर्गुणों की उत्पत्ति हो जाऐगी और सच्चरित्रता,पातिव्रत्य आदि सभी सद्गुणों का लोप हो जाऐगा।फिर किसी मां के गर्भ से महापुरूष का जन्म नही होगा।सारा संसार म्लेच्छप्रायः हो जाऐगा। अंग्रेज इस बात को जानते अतः उन्होने गुरुकूलों को तुड़वाकर अंग्रेजी कॉलेजों की स्थापना करवाई।लॉर्ड मैकाले ने 6नीतियां भारतीय शिक्षा पद्धति को नष्ट करने के लिऐ बनाई।क्यूंकि अंग्रेजों को कम्युनिस्टों को और तथाकथित पाश्चात्य दार्शनिकों को खतरा तो केवल मनु की नीतियों से है न।वो मनु जिनके विषय में श्रुति स्वयं कहती है"यद्यद् मनुरब्रवीत् तत्तत् भैषज्यम्"जो जो कुछ मनु ने कहा वह सब महौषध है। जब तक मनु के संस्कार हिन्दूओं की रगों में है तब तक तो इन असुरों के सारे प्रयास विफल ही रहेंगे। करपात्री जी ने सनातनसंस्कृति की रक्षा लिए अनेकों गुरुकुलों व विद्यालयों का निर्माण करवाया।प्राचीन उपासना पद्धतियों को पुनः प्रारम्भ करवाया।आज भारत मे थोडी बहुत जो भी पूजोपासना पद्धतियां शेष है वह करपात्री जी तथा उनके जैसे कई महापुरुषों के तप का वरदान है अन्यथा हमें ये भी मालूम नही होता कि हम सनातन धर्मी हिन्दू है और हम तपःपूत ऋषियों की सन्तान है। अपने शरीर का प्रदर्शन करके धन कमाने वाले समाज को अश्लीलता व नग्नता परोसने वाले,चरित्रहीनता फैलाने वाले बोलीवुड-होलिवुड के भांड-भड़ुओं को तो हम खूब जानते है परन्तु अपने पूर्वजों महापुरुषों और महत्तत्वों को हम कितना जानते हैं जिनके बलिदानों से भारत भूमि का कण-कण आप्लावित है जरा सोचिए....। अब तो धार्मिक मंचो पे भी भांड-भड़ुओं के जैसे आलाप होने लगे है।विधर्मियों की कही अश्लील शेरो-शायरी,गन्दे फिल्मीगीत चित्रविचित्र भावभंगिमाएं इन सबने पवित्र व्याख्यानो प्रवचनों वर्णनों ओर कथाओं की जगह ले ली है।यह कैसी विडम्बना है? धर्मसम्राट करपात्री एक युगपुरुष थे।वह पूर्वजन्म की विद्या और तप लेकर अवतरित हुऐ थे अन्यथा इतना महत्कार्य किसी साधारण व्यक्तित्व की बात नही।रामराज्य के विषय पर जब वह कुछ बोलते तो सदैव मानस की इन पंक्तियों को दोहराया करते- #अलपमृत्युनहीकबनेउपीरा। #सबसुन्दरसब_निरुजसरीरा।। #नहिंदरिद्रकोउदुःखीन_दीना। #नहिकोउअबुधनलच्छनहीना।। #सबउदारसबपरउपकारी। #विप्रचरनसेवकनरनारी।। #एकनारिव्रतरतसब_झारी। #तेमनबचक्रमपति_हितकारी।। उनसे किसी ने पूछा कि अगर समग्र भारतीय संस्कृति व मर्यादा का एकत्र दर्शन

	करना हो तो कौन सा ग्रन्थ पढ़ना चाहिऐ?करपात्री जी बोले;"रामचरितमानस सकलनिगमागमसम्मतं ग्रन्थ है।इसकी एक चौपाई पर भी कोई प्रश्नरेखा नही खींच सकता।यह सर्वथा निरापद ग्रन्थ है।"मानस के प्रति उनकी अत्यन्त श्रद्धा थी।उन्होनें भारतीय समाज को यह चतुःसूत्री प्रदान की: धर्म की जय हो, अधर्म का नाश हो, प्राणियों में सद्भावना हो, विश्व का कल्याण हो। बाद मे उन्होनें दो बाते और जोड़ीं ; गौमाता की जय हो, गौ हत्या बन्द हो। करपात्री जी ने हिन्दूधर्म पर जो उपकार कर दिया है उससे भारत भूमि कभी भी उऋण नही हो पाएगी।आज महानुभावों मे जो कुछ सनातन धर्म के प्रति अखण्ड श्रद्धा देखी जाती है तो वह उनके व उनकी श्रेणी के महनीय युगद्रष्टाओं के महत्प्रयासों का परिणाम है। कालान्तर मे करपात्री जी की आंखों में असह्य दर्द रहने लगा।काशी के केदारघाट मे वह रहते थे।अब वह७५वर्ष के थे।एक दिन माघ शुक्लाचतुर्दशी सम्वत्२०३८ तदनुसार७फरवरी१९८२को वह एकान्त कक्ष मे चले गऐ।नित्य की पूजासाधना करने के बाद वह अपना एक प्रिय कीर्तन करते थे।उस कीर्तन को तीन बार दोहराने के बाद वह सहसा समाधिस्थ हो गऐ और योगमार्ग का आश्रय लेकर स्वेच्छा से अपने प्राणों को महाप्राण में विलीन कर दिया।उनके कथनानुसार उनकी देह को भगवती भागीरथी की गोद में जलसमाधि दे दी गई।आज भारत फिर से एक हरिनारायण की प्रतीक्षा कर रहा है। वह संकीर्तन था--- #हेआशुतोषजगदीशहरेजयप्रभुपार्वतीनाथ_हरे। #गोविन्दहरेगोपालहरेश्रीकृष्णद्वारकानाथहरे।। जय महादेव

श्री वैदिक ब्राह्मण ग्रुप, गुजरात

पीडीऍफ़ बुक्स

⇩ ⇩ ⇩ ⇩

	ग्रन्थ : श्री करपात्री जी संक्षिप्त जीवनी विषय : महाराज श्री का जीवन ग्रंथकार : वेदांती स्वामी डाउनलोड लिंक : क्लीक करे
	ग्रन्थ : अभिनव शंकरा विषय : महाराज श्री का जीवन ग्रंथकार : धर्मसंघ प्रकाशन डाउनलोड लिंक : भाग - १ भाग - २ भाग - ३ भाग - ४ भाग - ५ भाग - ६ भाग - ७

वेद आधारित ग्रन्थ	
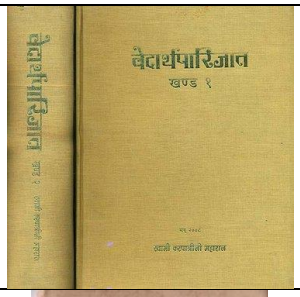	ग्रन्थ : वेदार्थ पारिजात विषय : वेदों का यथार्थ मर्म ग्रंथकार : धर्मसम्राट करपात्री जी महाराज डाउनलोड लिंक : भाग - १ भाग - २ हार्डकोपी
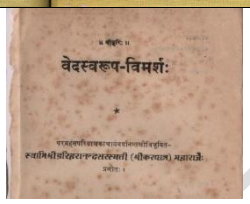	ग्रन्थ : वेद स्वरूप विमर्श विषय : वेदों का यथार्थ स्वरूप ग्रंथकार : धर्मसम्राट करपात्री जी महाराज डाउनलोड लिंक : क्लीक करे
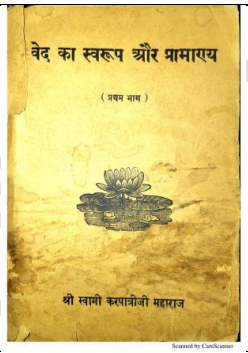	ग्रन्थ : वेदों का स्वरूप और प्रामाण्य विषय : वेदों स्वरूप की प्रमाणिकता ग्रंथकार : धर्मसम्राट करपात्री जी महाराज डाउनलोड लिंक : भाग - १ भाग - २
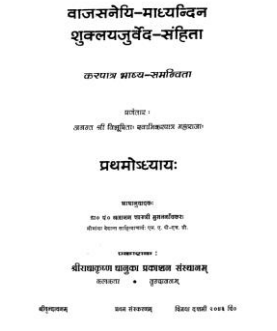	ग्रन्थ : यजुर्वेद भाष्य विषय : यजुर्वेद भाष्य आठ भागो में ग्रंथकार : धर्मसम्राट करपात्री जी महाराज डाउनलोड लिंक : भाग - १ भाग - २ भाग - ३ भाग - ४ भाग - ५ भाग - ६ भाग - ७ भाग - ८

श्री वैदिक ब्राह्मण ग्रुप, गुजरात

आधुनिक राजनीति और समाज व्यवस्था के विश्लेषणात्मक ग्रन्थ

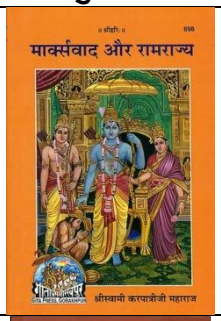	ग्रन्थ : मार्क्सवाद और रामराज्य विषय : अंतरराष्ट्रीय राजनीति व् पाश्चात्य विचारको की समीक्षा ग्रंथकार : धर्मसम्राट करपात्री जी महाराज डाउनलोड लिंक : क्लीक करे - हार्डकोपी
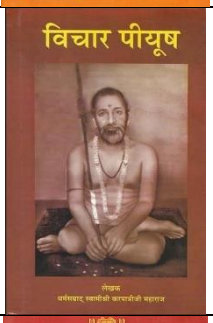	ग्रन्थ : विचार पियूष विषय : भारतीय वैदिक कल से आधुनिकता का चिन्तन ग्रंथकार : धर्मसम्राट करपात्री जी महाराज डाउनलोड लिंक : क्लीक करे - हार्डकोपी
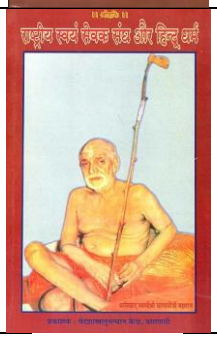	ग्रन्थ : राष्ट्रिय स्वयं सेवक संघ और हिन्दू धर्म विषय : आरएसएस की कार्यशैली की समीक्षा ग्रंथकार : धर्मसम्राट करपात्री जी महाराज डाउनलोड लिंक : क्लीक करे
	ग्रन्थ : संघर्ष और शांति विषय : जीवन मार्गदर्शन ग्रंथकार : धर्मसम्राट करपात्री जी महाराज डाउनलोड लिंक : क्लीक करे
	ग्रन्थ : चातुर्वर्ण्य संस्कृति विमर्श विषय : सामाजिक व्यवस्था ग्रंथकार : धर्मसम्राट करपात्री जी महाराज डाउनलोड लिंक : क्लीक करे
	ग्रन्थ : संकीर्तन मीमांसा एवं वर्णाश्रम मर्यादा विषय : सामाजिक व्यवस्था ग्रंथकार : धर्मसम्राट करपात्री जी महाराज डाउनलोड लिंक : क्लीक करे
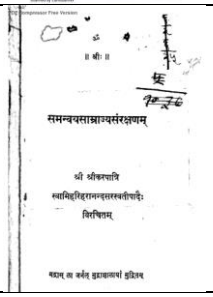	ग्रन्थ : समन्वय साम्राज्य संरक्षण विषय : राजनैतिक व्यवस्था ग्रंथकार : धर्मसम्राट करपात्री जी महाराज डाउनलोड लिंक : क्लीक करे

श्री वैदिक ब्राह्मण ग्रुप गुजरात

समीक्षात्मक ग्रन्थ

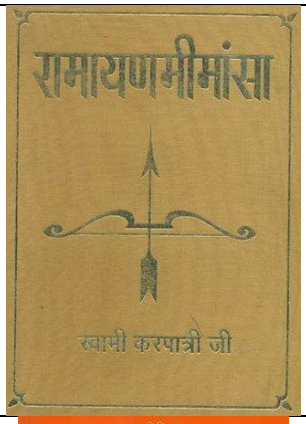

ग्रन्थ : रामायण मीमांसा
विषय : रामायण पर लगे आक्षेपों का खंडन
ग्रंथकार : धर्मसम्राट करपात्री जी महाराज
डाउनलोड लिंक :
क्लीक करे - हार्डकोपी

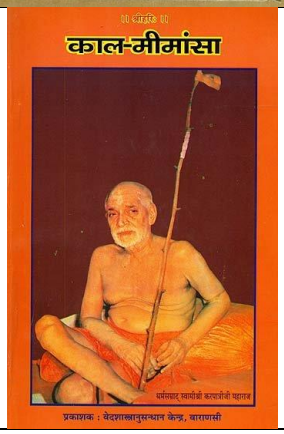

ग्रन्थ : काल मीमांसा
विषय : वैदिक काल निर्धारण
ग्रंथकार : धर्मसम्राट करपात्री जी महाराज
डाउनलोड लिंक :
लिंक १ - लिंक २

श्रीविद्या ग्रन्थ

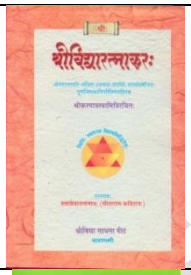

ग्रन्थ : श्रीविद्या रत्नाकर
विषय : श्रीविद्या
ग्रंथकार : धर्मसम्राट करपात्री जी महाराज
डाउनलोड लिंक : क्लीक करे

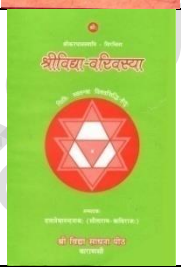

ग्रन्थ : श्रीविद्या वरिवस्या
विषय : श्रीविद्या
ग्रंथकार : धर्मसम्राट करपात्री जी महाराज
डाउनलोड लिंक : क्लीक करे

वेदांत आधारित ग्रन्थ

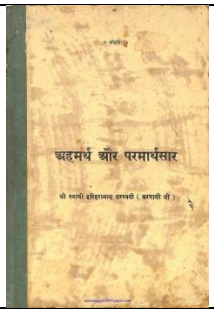

ग्रन्थ : अहमार्थ और परमार्थ सार
विषय : वेदांत
ग्रंथकार : धर्मसम्राट करपात्री जी महाराज
डाउनलोड लिंक :
भाग - १ भाग - २ भाग - ३ भाग - ४

श्री वैदिक ब्राह्मण ग्रुप, गुजरात

भक्ति रस	
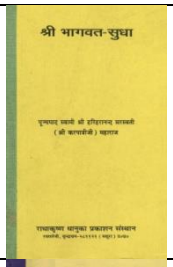	ग्रन्थ : भागवत सुधा विषय : भक्ति रस ग्रंथकार : धर्मसम्राट करपात्री जी महाराज डाउनलोड लिंक : क्लीक करे
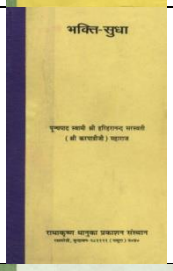	ग्रन्थ : भक्ति सुधा विषय : भक्ति रस ग्रंथकार : धर्मसम्राट करपात्री जी महाराज डाउनलोड लिंक : क्लीक करे
	ग्रन्थ : राधा सुधा विषय : भक्ति रस ग्रंथकार : धर्मसम्राट करपात्री जी महाराज डाउनलोड लिंक : क्लीक करे
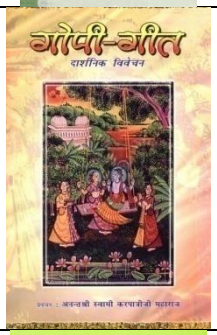	ग्रन्थ : गोपी गीत विषय : भक्ति रस ग्रंथकार : धर्मसम्राट करपात्री जी महाराज डाउनलोड लिंक : क्लीक करे
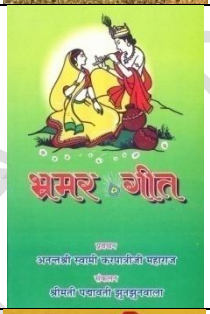	ग्रन्थ : भ्रमर गीत विषय : भक्ति रस ग्रंथकार : धर्मसम्राट करपात्री जी महाराज डाउनलोड लिंक : क्लीक करे
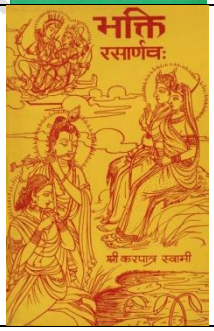	ग्रन्थ : भक्ति रसार्णव विषय : भक्ति रस ग्रंथकार : धर्मसम्राट करपात्री जी महाराज डाउनलोड लिंक : क्लीक करे

श्री वैदिक ब्राह्मण ग्रुप, गुजरात

अन्य ग्रन्थ	
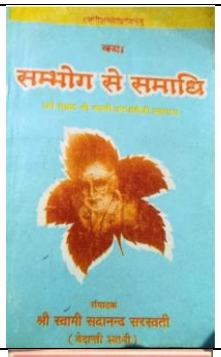	ग्रन्थ : क्या सम्भोग से समाधी विषय : ओशो मत समीक्षा ग्रंथकार : धर्मसम्राट करपात्री जी महाराज डाउनलोड लिंक : क्लीक करे
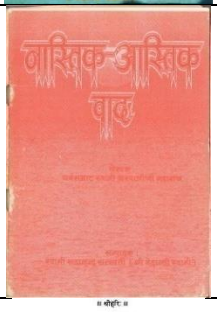	ग्रन्थ : नास्तिक और आस्तिक वाद विषय : नास्तिक और आस्तिक वाद ग्रंथकार : धर्मसम्राट करपात्री जी महाराज डाउनलोड लिंक : क्लीक करे
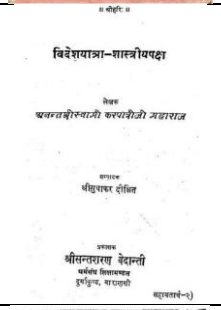	ग्रन्थ : विदेश यात्रा शास्त्रीय पक्ष विषय : विदेश यात्रा की शास्त्रोक्त समीक्षा ग्रंथकार : धर्मसम्राट करपात्री जी महाराज डाउनलोड लिंक : क्लीक करे
	ग्रन्थ : गौ - एक समग्र चिन्तन विषय : गौमाता महत्व ग्रंथकार : धर्मसम्राट करपात्री जी महाराज डाउनलोड लिंक : क्लीक करे
	ग्रन्थ : करपात्र चिन्तन विषय : महाराज श्री के विचारो पर चिंतन ग्रंथकार : वेदांती महाराज डाउनलोड लिंक : क्लीक करे
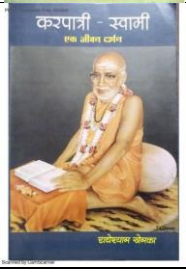	ग्रन्थ : करपात्र चिन्तन विषय : महाराज श्री के विचारो पर चिंतन ग्रंथकार : वेदांती महाराज डाउनलोड लिंक : क्लीक करे

श्री वैदिक ब्राह्मण ग्रुप गुजरात

शास्त्र अध्ययन के लिए केवल दो विधा है।

१. वेद पूर्व(कर्मकांड आदि) भाग के लिए ब्राह्मण परंपरा से अथवा पारंपरिक सम्प्रदाय(शंकर परम्परा आदि से) अथवा आधुनिक संस्था से मुक्त पाठशाला में जाना चाहिए।

२. वेदान्त अध्ययन के लिए केवल ६ मार्ग ही मान्य है

क. शंकराचार्य - अद्वैत

ख. मध्वाचार्य - द्वैत

ग. रामानुजाचार्य - विशिष्ठद्वैत

घ. वल्लभाचार्य - शुद्धाद्वैत

च. चैतन्य महाप्रभु - अचिंत्यभेदाभेद

छ. निम्बार्काचार्य - द्वैताद्वैत

बाकी सब संस्थाए है उसमें से अधिकतर संस्थाए वामपंथी है। जिसमे समाज/परिवार/मिशन/सम्प्रदाय/बिज़नेस बाबा/कथित आध्यात्मिक गुरु/अनाधिकृत मंत्र दीक्षा देने वाले आदि धर्म के नाम पर केवल दुकान चला रहे है।

सत्य को जाने,अपनी परंपरा और लौटे।

आज ऑनलाइन डाउनलोड हो रहे पुस्तको में मिलावटी होने की पूर्ण शंका है। अतः ऑनलाइन बुक भरोशे लायक नहीं है।

प्रिंटेड ऑथेंटिक धार्मिक पुस्तक कहां मिलते है?

१. गीता प्रेस,गोरखपुर
२. चौखम्बा, वाराणसी
३. वेंकटेश्वर स्टीम प्रेस,मुंबई
४. सत साहित्य प्रकाशन,वृंदावन
५. दक्षिणामूर्ति मठ प्रकाशन,वाराणसी
६. स्वस्ति प्रकाशन, गोवर्धन मठ,पूरी
७. शारदा मठ, द्वारका
८. आनंद आश्रम, बिलखा(गुजराती)

बाकी संस्थाकीय व सम्प्रदाय/मिशन/समाज/परिवार आदि की पुस्तक आप न ही खरीदे क्योंकि उनमें सब ने अपनी अपनी संस्था व संस्था को फ़ायदा कराने के लिए अपनी संस्था के अनुयायी बढ़ाने के लिए मनघडंत अर्थघटन किए है।।

हिन्दू धर्म को जानना है तो संस्था के चश्मे उतारो।।

श्री वैदिक ब्राह्मण ग्रुप,गुजरात

श्री वैदिक ब्राह्मण टेलीग्राम प्रकल्प

धर्मसम्राट श्री करपात्री जी महाराज
चैनल लिंक : https://t.me/kapatriji
शंकराचार्य श्री निश्चलानंद सरस्वती जी
चैनल : https://t.me/purimath
शंकराचार्य श्री स्वरूपानंद सरस्वती जी
चैनल : https://t.me/dwarkapith
પૂજ્ય ડોંગરેજી મહારાજ(ગુજરાતી)
चैनल : https://t.me/dongrejimaharaj

कृपया चैनल को अपने ग्रुप सर्कल बंधुओं में शेयर एवं सब्सक्राइब करे।।

हर हर शंकर जय जय शंकर ▫
हर हर महादेव। ▫
- क्षेत्रज्ञ
(श्री वैदिक ब्राह्मण ग्रुप,गुजरात)

श्री वैदिक ब्राह्मण ग्रुप,गुजरात